इकाई 18 सहभागिता विधि

इकाई की रूपरेखा

18.0 उद्देश्य

18.1 प्रस्तावना

18.2 सहभागिता शोध क्या है? (What is Participatory Research?)

18.3 सहभागिता शोध की विधियाँ : अवलोकन विधि (Methods of Participatory Research: Observation Method)

18.3.1 भागीदार अवलोकन (Participant Observation)

18.3.2 गैर-भागीदार अवलोकन (Non-Participant Observation)

18.3.3 उप-भागीदार अवलोकन (Quasi-participant Observation)

18.4 केंद्रीकृत साक्षात्कार (Focused Interview)

18.5 मौखिक इतिहास (Oral Histories)

18.6 जीवन इतिहास (Life History)

18.7 प्रकरण अध्ययन विधि (Case Study Method)

18.8 वृत्तांत विधि (Narratives)

18.9 केंद्रीकृत समूह विचार-विमर्श (Focus Group Discussion)

18.10 प्रमाणित सिद्धांत (Grounded Theory)

18.10.1 आँकड़ों के स्रोत एवं न्यादर्श (Data Sources and Sampling)

18.10.2 व्यक्तिनिष्ठता (Subjectivity)

18.10.3 प्रतिलेखन (Transcription)

18.11 आँकड़ों का विश्लेषण गुणात्मक (Analysis of Qualitative Data)

18.12 रिपोर्ट लेखन (Report Writing)

18.13 सहभागिता विधियों की आलोचना (Criticism of Participatory Methods)

18.14 सहभागिता शोध के लाभ (Advantages of Participatory Research)

18.15 सारांश

18.16 शब्दावली

18.17 कुछ उपयोगी पुस्तकें

18.18 बोध प्रश्नों के उत्तर या संकेत

18.0 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन के पश्चात् आप :

- सहभागिता शोध की अवधारणा को बता सकेंगे;
- आँकड़ों के एकत्रीकरण एवं आँकड़ों के सृजन के बीच अंतर बतला पाएँगे;
- सहभागिता शोध के विभिन्न संयंत्रों की व्याख्या कर सकेंगे;
- आगमनात्मक सिद्धांत विधि के रूप में प्रमाणित सिद्धांत की विवेचना कर सकेंगे;

- गुणात्मक आँकड़ों के विश्लेषण में निहित विभिन्न चरणों की पहचान कर सकेंगे;
- सहभागिता विधियों के विरुद्ध वृहद् आलोचनाओं को चिन्हित कर सकेंगे; और
- सहभागिता शोधकर्ताओं के लिए सीख (lession) प्राप्त कर सकेंगे।

18.1 प्रस्तावना

जैसी कि इकाई 6 में विवेचना की गई है, परंपरागत रूप में उत्तर-सकारात्मकवाद प्रतिमान से संबंधित परिमाणात्मक शोध एवं निर्वचनात्मक प्रतिमान से संबंधित गुणात्मक शोध नामक दो तरीकों का अनुपालन सामाजिक विज्ञानों में शोध करने में किया जाता है। अर्थशास्त्र (व्यष्टि एवं समष्टि दोनों) के क्षेत्र में कार्य करने वाले शोधकर्ता सामान्यतः आँकड़ों के वृहद् भंडार पर आधारित निष्कर्षों पर विश्वास करते हैं। इन अध्ययनों के लिए व्यक्तिगत शोधकर्ताओं को क्षेत्र में सम्मिलित किए बिना आँकड़ों का एकत्रीकरण आँकड़े संकलन करने वाली एजेंसियों या आँकड़े एकत्रित करने के लिए सवैतिक व्यक्तियों द्वारा किया जाता है। इस प्रकार के परिमाणात्मक शोध के परिणाम प्रकरण से संवेदनशील नहीं होते हैं तथा जिनसे संबंधित अध्ययन किए जा रहे हैं उनके विचारों या लोक-आवाजों की उपेक्षा करते हैं। इसके बजाय शोधकर्ता की राय लोगों की बातों एवं इच्छा पर थोप दी जाती है। न्यादर्श सर्वेक्षण के माध्यम से परिमाणात्मक आँकड़ों के एकत्रीकरण एवं अंतर्निहित अनेक चरणों वाले उसके विश्लेषण में समय लगता है। प्राकृतिक आपदा एवं सुनामी जैसी विपत्तियों में हम परिमाणात्मक शोध के परिणामों की प्रतीक्षा नहीं कर सकते। इसके अतिरिक्त निर्धनता निवारण जैसी योजनाओं एवं कार्यक्रमों में परिमाणात्मक शोध बहुत प्रभावशाली नहीं रहे हैं। इस प्रकार की स्थिति में वैकल्पिक विधि के रूप में सहभागिता विधि का अधिकाधिक उपयोग सामाजिक विज्ञानों में आँकड़ों के सृजन एवं विश्लेषण के लिए किया जाता है।

अतः इस इकाई के अंतर्गत हम सहभागिता विधि से संबंधित विभिन्न बातों जैसे सहभागिता शोध की अवधारणा, गुणात्मक आँकड़े एकत्रित करने के विभिन्न यंत्र, गुणात्मक आँकड़ों का विश्लेषण, इसके लाभ, सीमाओं एवं सहभागिता शोध के लिए महत्वपूर्ण सीख इत्यादि पर विचार करेंगे। आइए, हम सहभागिता शोध की अवधारणा की व्याख्या से प्रारंभ करें।

18.2 सहभागिता शोध क्या है?

सहभागिता शोध के मौलिक सिद्धांत के अंतर्गत आँकड़ों के सृजन की प्रक्रिया में शोधकर्ता की प्रत्यक्ष सहभागिता निहित होती है। यहाँ आँकड़ों के एकत्रीकरण एवं सृजन के बीच महत्वपूर्ण अंतर किया जाता है। जब किसी वृहद् न्यादर्श समग्र से संबंधित किसी एजेंसी द्वारा आँकड़े एकत्रित किए जाते हैं तो इस मान्यता के साथ प्रमापीकरण किया जाता है कि साक्षात्कार किए जाने वाले सभी व्यक्ति प्रश्नों को उसी रूप में समझेंगे तथा उनका उत्तर देंगे जिस रूप में प्राथमिकता शोधकर्ता ने उसकी अवधारणा बनाई है। क्षेत्र की स्थिति में यह स्थिति हो भी सकती है अथवा नहीं भी। उन प्रश्नों को करने वाला प्रत्येक क्षेत्र शोधकर्ता एक भिन्न अर्थ का संदेश दे सकता है तथा उत्तर देने वाला ऐसा उत्तर दे सकता है जो किसी भी प्रमापित श्रेणी में सटीक न हो किंतु क्षेत्र शोधकर्ता उत्तर को कम आकार में करेगा तथा उसे एक पुनर्गठित अनुसूची की किसी श्रेणी विशेष में ठीक करेगा। अतः हो सकता है कि प्राप्त परिणाम आवश्यक रूप से अध्ययन किए जाने वाले लोगों की बाजार भावनाओं अथवा मत को प्रतिबिंबित न करें।

इस कारण से ही न्यादर्श विधि एवं प्रश्नावली का उपयोग करके आँकड़ों को प्राप्त करने की इस प्रक्रिया को आँकड़ों का एकत्रीकरण कहा जाता है।

सहभागिता शोध में प्राथमिक शोधकर्ता सदैव उत्तर देने वाले के संपर्क में होता है तथा आमने-सामने वार्तालाप करता है। यदि शोधकर्ता समझता है कि उत्तर देने वाले प्रश्न को नहीं समझे हैं तो भाषा को परिवर्तित करने या संबंधित प्रश्न को पुनर्गठित करने या अन्य प्रत्यक्ष स्रोतों से सूचना को एकत्रित करने की उसे स्वतंत्रता होती है। **आँकड़ा सृजन** नामक इस तरीके के अंतर्गत शोधकर्ता को एक प्रश्न से अनेक उत्तर सृजित करने की छूट होती है तथा उसके पश्चात् अपनी निर्वचनात्मक कौशल का उपयोग करके कोई निष्कर्ष या अर्थ निकालना होता है ताकि वह किसी सामान्यीकरण की स्थिति में पहुँच सके। आँकड़ों के सृजन की सहभागिता विधि के अंतर्गत आँकड़ों के एकत्रीकरण एवं विश्लेषण की प्रक्रिया साथ-साथ चलती है जो इसे अधिक विश्वसनीय बना देती है तथा अनेक उत्तर एवं संभावनाओं को प्रस्तुत करती है। इस लोच एवं विश्वसनीय सामान्यीकरण के सृजन की सामर्थ्य के कारण ही शोध की सहभागिता विधि वर्तमान अर्थशास्त्रियों द्वारा उपयोग की जा रही शोध प्रविधि में अधिक महत्वपूर्ण हो गई है।

आइए, हम सर्वप्रथम प्रयास करें और समझें कि सहभागिता शोध क्या है? तथा यह कहाँ और कैसे प्रारंभ हुई? सहभागिता शोध विधियों की चर्चा सर्वप्रथम मानव-शास्त्रीय आनुभाविक शोध में की गई जिसे साधारण तौर पर मानव-जाति वर्णन के नाम से जाना जाता है। मानव जाति-वर्णन को उस विधि के रूप में परिभाषित किया जाता है जिसका उपयोग EMIC मत नामक एक अंतरंग के परिदृश्य से गुणात्मक आँकड़ों के सृजन के लिए किया जाता है। सरल शब्दों में, इसका अभिप्राय यह होता है कि जिन लोगों के विषय में हम लिख रहे हैं उन्हें अपनी बातें अवश्य बतलानी चाहिए तथा शोधकर्ता 'विस्तृत वर्णन' के रूप में उसका मात्र निर्वचन करता है। लोग क्या कहते हैं तथा क्या चाहते हैं उस पर शोधकर्ता की अपनी राय अध्यारोपित करने (थोपने) की अपेक्षा लोगों की आवाज पर ध्यान देना शोध के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण होता है।

18.3 सहभागिता शोध की विधियाँ : अवलोकन विधि

बॉनिस्ला मालिनोस्की (Bronislaw Malinowski) को शोध की इस प्रविधि के संस्थापक के रूप में माना जाता है। उन्होंने इस विधि का 'भागीदार अवलोकन' के रूप में वर्णन किया। उन्होंने 'ट्रोब्रिएण्ड द्वीपवासियों' के बीच तीन वर्ष से अधिक निवास किया तथा उनकी शैली का वर्णन एक प्रतिष्ठित मानव जाति वर्णन से संबंधित पुस्तक (Argonauts of Western Pacific) शीर्षक में किया जिसका प्रकाशन सर्वप्रथम वर्ष 1922 में हुआ। सहभागिता शोध की विधियों को एक शताब्दी या उससे भी अधिक वर्षों से अनेक भिन्न-भिन्न रूपों में परिभाषित एवं पुनर्परिभाषित किया गया। मालिनोस्की की भागीदार अवलोकन विधि में आवश्यक है कि शोधकर्ता लंबी अवधि तक कार्यक्षेत्र में निवास करता रहे तथा उस समाज का अंग बन जाए जिसका वह शोध कर रहा है। बाद में शोधकर्ताओं ने अनुभव किया कि क्षेत्र में लंबी अवधि (तीन माह से 3 वर्ष तक तथा कुछ स्थितियों में अधिक लंबी अवधि भी) तक बने रहना सदैव संभव नहीं होता है तथा कुछ समस्याओं में तुरंत एवं अत्यावश्यक हस्तक्षेप आवश्यक हो जाता है। भागीदार अवलोकन की अन्य आलोचना यह थी कि साक्षात्कारकर्ता सदैव बाहर का व्यक्ति होता है तथा यदि वह किसी क्षेत्र विशेष में दीर्घ अवधि तक निवास भी करता है तो भी इस बात की कोई गारंटी नहीं होती है कि वहाँ का समुदाय उसे अपने अंतरंग के रूप में मानेगा तथा अपने निजी जीवन के प्रत्येक पहलू पर शोधकर्ता से विचार-विमर्श करेगा।

फिर भी, इन सीमाओं में से किसी ने भी सहभागिता शोध के सबसे महत्वपूर्ण यंत्रों में से एक अवलोकन विधि के रूप में उपयोग के महत्व को प्रभावित नहीं किया। बाल्की (Balki) (2009: 206) इसे 'सर्वश्रेष्ठ गुणात्मक विधि' की संज्ञा देते हैं। बाइमैन (Bryman) (1998 47-9) यह

कह कर अवलोकन विधि के पक्षधर होते हैं कि यह एकल विधि नहीं बल्कि यह अवलोकन करने के अनेक तरीकों को संयुक्त कर सकती है। अवलोकन विधि के महत्व को स्वीकार करते हुए इस तकनीक में कुछ संशोधन किए गए तथा अवलोकन करने के अब तीन महत्वपूर्ण तरीके हैं जो मान्यता प्राप्त हैं : (1) भागीदार अवलोकन, (2) उपभागीदार अवलोकन एवं (3) गैर-भागीदार अवलोकन।

18.3.1 भागीदार अवलोकन (Participant Observation)

गुडे एवं हैट (Goode & Hatt – 1981 : 121) द्वारा अनियंत्रित भागीदार अवलोकन को एक ऐसी कार्यविधि के रूप में परिभाषित किया गया है जिसमें अन्वेषणकर्ता स्वयं को इस प्रकार छिपा सकता है कि उसे समूह के सदस्य के रूप में स्वीकार कर लिया जाए। जब शोधकर्ता अपने कार्य स्थल पर दीर्घ अवधि तक निवास करते हैं तो यह मान्यता होती है कि उन्हें समुदाय या समूह के सदस्य के रूप में माना जाता है। उपभोक्ता व्यवहार का अध्ययन करने वाला शोधकर्ता अपनी पहचान एक शोधकर्ता के रूप में प्रकट न करे तथा उपभोक्ता होने का बहाना करे अपने अनुभवों एवं चिंताओं के विषय में उनसे विचार-विमर्श करे। भागीदार शोध करते समय शोधकर्ता प्रायः अंतरंग पहचान मानते हैं। कभी-कभी शोधकर्ता वहाँ रहने के वास्तविक उद्देश्य को प्रकट किए बिना तटस्थ स्थिति में हो जाते हैं।

भागीदार अवलोकन विधि के लाभ

शोधकर्ता समुदाय को बिना विघ्न पहुँचाए एवं उनके निजी व्यक्तिगत जीवन में हस्तक्षेप किए बिना अपने कार्य से प्रासंगिक सभी सूचनाओं को अंकित कर सकता है। बाजार के एक कोने या संगठन या किसी अन्य कार्य या क्षेत्र की स्थिति से संबंधित नोट लिखने में बैठने के बजाय शोधकर्ता इन गतिविधियों में सहभागी होता है। ऐसा करने में वह सामान्य गतिविधियों में विघ्न डाले बिना प्रासंगिक सूचनाओं को एकत्रित करता है तथा अपने अवलोकन को एक कार्य-डायरी में अंकित करता है। तत्पश्चात् वह एक मानसिक नोट बनाता है तथा अपने कार्य स्थल पर वापस आ जाता है और इन अवलोकनों को तुरंत अंकित कर लेता है। समुदाय या लोग आवश्यक नहीं कि वे इस बात से जागरूक हों कि उन पर शोध किया जा रहा है। इससे अवाधित एवं पक्षपात रहित सूचना प्राप्त करने में सहायता मिलती है।

भागीदार अवलोकन बिना किसी विषय संबंधी पक्षपात के विस्तृत सूचना प्राप्त करने में सहायता करता है। कई शोधकर्ता आँकड़ों को एकत्रित करने के लिए प्रश्नावली एवं गहन साक्षात्कार की तुलना में इसे बेहतर मानते हैं।

भागीदार अवलोकन विधि की कमियाँ

भागीदार अवलोकन की वृहद् कमियों में एक इसकी प्रमापीकरण के लिए कार्य-विधि विकसित करने में सक्षम न होने की है। भागीदार अवलोकन करने वाला शोधकर्ता समुदाय में एक विशिष्ट स्थिति प्राप्त कर लेता है तथा अपने लाभ के दृष्टिकोण से अवलोकन करता है। उसके अंकित प्रलेख व्यक्तिगत या व्यक्ति विशिष्ट होते हैं। उसी स्थिति का अवलोकन करने वाला अन्य अवलोकनार्थ संभव है, कि उसे समान परिदृश्य में विचार करने में सक्षम न हो।

भागीदार अवलोकन विधि के अंतर्गत शोधकर्ता समस्याओं में भावनात्मक रूप से सम्मिलित हो सकता है तथा उसकी वस्तुनिष्ठता शिथिल हो जाने की प्रवृत्ति होती है। ऐसा प्रायः दहेज, महिला गर्भपात, छात्र आंदोलन, कीमत वृद्धि, सार्वजनिक-निजी साझेदारी एवं व्यापार संघ गतिविधियों इत्यादि समस्याओं में होता है।

इनमें से कुछ कमियों के निराकरण के लिए शोधकर्ताओं ने गैर-भागीदार अवलोकन का प्रस्ताव किया।

18.3.2 गैर-भागीदार अवलोकन

गुणात्मक शोधकर्ता गैर-भागीदार अवलोकन करने के लिए अनेक तरीकों का नव प्रवर्तन करते हैं। उनमें से कई कुछ गतिविधियों में भाग लेंगे तथा बाहर से दूसरों का अवलोकन करेंगे। कुछ अन्य दृश्य-अंकन का उपयोग करेंगे तथा बाद में सामान्यीकरण के लिए इन दृश्य-अंकनों (Video-Recordings) का विश्लेषण करेंगे। ऐसा करते समय विस्तृत जाँच के लिए लोगों के हाव-भाव एवं गैर-मौखिक चेष्टाओं पर ध्यान देना संभव था। तथापि, इस विधि के आलोचकों का मत है, चूँकि व्यक्ति विशेष इस स्थिति में पूर्ण रूप से भाग नहीं ले रहा है, अतः वह इन अवलोकनों का बिलकुल सही अर्थ प्रदान करने की स्थिति में नहीं होता है।

कभी-कभी शोधकर्ताओं ने छिपे हुए कैमरों का उपयोग किया तथा व्यक्तिगत अवलोकनों को अलग से अंकित किया किंतु इस विधि में भी अनेक समस्याएँ थीं। अनेक ने शोध के लिए छिपे हुए कैमरे के उपयोग को अनैतिक माना। किसी न किसी अन्य गतिविधियों में सहभागिता वह स्थिति है जिसे शोधकर्ताओं ने बाद में उप-भागीदार अवलोकन की संज्ञा दी।

18.3.3 उप-भागीदार अवलोकन

इन दिनों अधिकांश शोधकर्ता अवलोकन की उप-भागीदार विधि के उपयोग को वरीयता प्रदान करते हैं। इस विधि में शोधकर्ता दोहरी प्रविष्टि प्रणाली का अनुपालन कर सकता है। उदाहरणार्थ, यदि आप श्रम-प्रबंध संबंधों की जाँच करने का प्रयास कर रहे हैं तो यह आवश्यक हो जाता है कि आप प्रबंध व्यवस्था से अनुमति प्राप्त करें तथा साथ ही श्रम-संघ की सभाओं में भाग लेने के लिए श्रम-संघ नेताओं के साथ घनिष्ठता स्थापित करें। अनेक बार विभिन्न स्थानों पर साक्षात्कार करने की आवश्यकता होती है। पंजाब एवं उत्तर प्रदेश के एक इसी प्रकार के अध्ययन में हमने पाया कि श्रमिक शोधकर्ता से कारखाने के बाहर बातचीत करने को वरीयता देते थे। शोधकर्ता प्रबंधकों एवं निरीक्षकों से कारखाने में बात करता था तथा दोपहर का भोजन श्रमिकों की कैंटीन में करता था। भोजन करते समय श्रमिकों के साथ समय निश्चित किया जाता था तथा तत्पश्चात् शोधकर्ता उनके घर जाता था, प्रायः वहाँ घंटों व्यतीत करता था तथा निरीक्षकों एवं प्रबंधकों के साथ साक्षात्कार पूर्ण करने के पश्चात् उसी मलिन बस्ती में एक छोटा कमरा किराए पर लेता था जिसमें अधिकांश श्रमिक निवास करते हैं तथा उनके दैनिक अनुभवों के विषय में बातचीत करता था।

अवलोकन के महत्वपूर्ण शोध यंत्र के अतिरिक्त गुणात्मक शोधकर्ता प्रायः केंद्रीकृत साक्षात्कार, गहन साक्षात्कार, कथन, मौखिक/जीवंत प्रकरण इतिहास, केंद्रीकृत समूह परिचर्चा/साक्षात्कार एवं विषय वस्तु विश्लेषण का उपयोग करते हैं। इन सभी संयन्त्रों (tools) की चर्चा आगे की जा रही है।

बोध प्रश्न 1

1) आँकड़ों के एकत्रीकरण एवं आँकड़ों के सृजन में क्या अंतर होता है?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2) (EMIC) विचार शब्द से आप क्या अर्थ समझते हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

3) भागीदार अवलोकन विधि किस प्रकार गैर-भागीदार अवलोकन विधि से भिन्न होती है?

.....

.....

.....

.....

.....

18.4 केंद्रीकृत साक्षात्कार (Focussed Interview)

केंद्रीकृत साक्षात्कार के अंतर्गत शोधकर्ता एवं उत्तरदाता आमने-सामने या एक-से-एक वार्तालाप करते हैं जिसमें शोधकर्ता प्रश्न करता है तथा उत्तरदाता विस्तृत या संक्षिप्त उत्तर प्रदान करता है। लोगों या किसी विशिष्ट न्यादर्श व्यक्ति समूह से बातचीत करना या साक्षात्कार अनुसूची या साक्षात्कार मार्गदर्शक संगठित प्रश्नावली का उपयोग करना आँकड़ों के एकत्रीकरण की प्रमापित विधि होती है।

गुणात्मक शोध के लिए केंद्रीकृत साक्षात्कार प्रायः असंगठित होते हैं तथा प्रश्न अभिन्न रूप से खुले होते हैं। इससे उत्तरदाता को विस्तृत उत्तर देने की स्वतंत्रता प्राप्त होती है।

यह स्मरण करना महत्वपूर्ण है कि साक्षात्कार 'मौलिक रूप से सामाजिक वार्तालाप की प्रक्रिया' होता है। (गुडे एवं हैट - 1981 : 186) तथा इसमें सामाजिक संबंध विकसित करना सम्मिलित होता है। एक साक्षात्कार स्थिति के अंतर्गत केवल साक्षात्कारकर्ता ही नहीं बल्कि साक्षात्कार किए जाने वाला व्यक्ति भी शोधकर्ता के विषय में भी अपनी राय बनाता है। उत्तरदाताओं के प्रत्युत्तरों को इस बात से निर्धारित किया जा सकता है कि शोधकर्ता उससे क्या आशा करता है तथा शोधकर्ता में किस मात्रा में विश्वास विनियोजित करता है, इस विषयमें वह क्या सोचता है। हम बार-बार गोपनीयता एवं उसी से संबंधित शोधकर्ता की प्रेषण क्षमता के महत्व पर बल देंगे जो सहभागिता शोध की प्रमाण चिन्ह होती है।

18.5 मौखिक इतिहास

अपनी राय या अनुभवों को विस्तार से व्यक्त करने के उद्देश्य से उत्तरदाताओं को अधिक समय देने वाले लंबे अबाधित साक्षात्कार अनेक गुणात्मक शोधकर्ताओं की वरीयमान विधि है। साक्षात्कार लिए जाने वाले व्यक्ति को अपने जीवन के अनुभवों से संबंधित बातचीत करने, अपना मत व्यक्त करने, अपनी पहले की स्थिति या अपने समसामयिक के जीवन का स्मरण एवं पुनर्गणना को प्रोत्साहित किया जाता है। इसके अतिरिक्त सम्मिलित की गई प्रक्रियाओं से संबंधित उनके ज्ञान एवं उनके द्वारा देखे गए परिवर्तनों से संबंधित बातचीत करने को प्रोत्साहित किया जाता है। (बाल्की - 2010 : 207) मौखिक इतिहास या कथन एकत्रित करने

के लिए एक अच्छे श्रोता होने के कौशल की आवश्यकता होती है। अनेक बार, आप यह मान सकते हैं कि उत्तरदाता द्वारा दी गई सूचना आपके केंद्रीकृत रुचि के क्षेत्र से प्रत्यक्ष रूप से संबंधित नहीं है। किंतु वह सहायक सूचना आप द्वारा खोज की जाने वाली समस्याओं, मुद्दों या प्रश्नों के बेहतर समझ के लिए निश्चित संदर्भ प्रदान कर सकती है। मौखिक इतिहासों में कोई व्यक्ति प्रारंभ में प्रश्नों के माध्यम से जाँच कर सकता है तथा उसके पश्चात् किसी प्रश्न विशेष का कोई विस्तृत उत्तर खोजने के उद्देश्य से एक महत्वपूर्ण प्रश्न करने के लिए अवसरवश हस्तक्षेप कर सकता है।

18.6 जीवन इतिहास

मानव जाति वर्णन एवं गुणात्मक शोधकर्ता जो अन्य महत्वपूर्ण यंत्र अपने पास रखते हैं उसे जीवन इतिहास विधि कहा जाता है। इस विधि के अंतर्गत किसी अवधि विशेष की ऐतिहासिक घटनाओं को समझने के लिए व्यक्तियों के जीवन इतिहास का पुनर्निर्माण किया जाता है। अनेक बार शोधकर्ता उस अवधि की घटनाओं का कालक्रम निर्माण करने के लिए डायरियों एवं आत्मकथाओं का उपयोग करते हैं। लोगों के अनुभव यह समझने में सुविधा प्रदान करते हैं कि किस प्रकार एवं क्या घटना हुई। जीवन इतिहास विधि अधिकांशतः उत्तरदाता की स्मरण एवं उस स्मृति को शोधकर्ता से विचार विमर्श करने की क्षमता पर निर्भर होती है। शोधकर्ता उत्तरदाता की सहयता से धीरे-धीरे सामाजिक प्रक्रियाओं को निर्धारित करता है। अर्थशास्त्र के संदर्भ में किसी मॉडल में उस अवधि में उतार-चढ़ाव अर्थात् गत 50 वर्षों में रूढ़िवादी एवं उदार अर्थशास्त्र के मॉडलों की लोकप्रियता एवं कमजोरी उस अवधि की प्रचलित सामाजिक प्रक्रियाओं द्वारा निर्धारित होती है। यह लिंग एवं वर्ग पर आधारित विभिन्न परिदृश्यों को समझने में भी सहायता करता है। अपने जीवन इतिहास का स्मरण करते समय अनेक बार उत्तरदाता शांत हो सकते हैं। यह शांति भी आँकड़े प्रदान करती है क्योंकि यह शोधकर्ता को बताती है कि किस प्रकार उस घटना विशेष के कारण उत्तरदाता को चिंता, मानसिक पीड़ा एवं गठन भावनात्मक अनुभव हुआ।

18.7 प्रकरण अध्ययन विधि

फर्मों एवं संगठन के व्यवहार का अध्ययन करने के लिए व्यवसाय-अर्थशास्त्री प्रकरण अध्ययन विधि का उपयोग करते हैं। शोधकर्ता एक कंपनी या संगठन पर ध्यान केंद्रित कर सकता है तथा उस संगठन के विस्तृत इतिहास से संबंधित सूचनाएँ एकत्रित कर सकता है। यिन (यिन – 1984 : 23) ने प्रकरण अध्ययन शोध विधि को निम्न रूप में परिभाषित करते हैं– ''यह वह आनुभाविक जाँच होती है एक समसामयिक तथ्य का उसके वास्तविक जीवन प्रसंग के अंतर्गत तब अन्वेषण करता है जबकि तथ्य एवं प्रसंग के बीच विभाजन रेखाएँ सुस्पष्ट नहीं होती हैं तथा जिनमें प्रमाण के अनेक स्रोत उपयोग किए जाते हैं।'' एक संगठन में अनेक खिलाड़ी होते हैं तथा उनके विस्तृत प्रकरण अध्ययन में उसके प्रत्येक भागीदार के परिदृश्य का ध्यान रखना होगा। विभिन्न भागीदारों से प्रमाण एकत्रित करने के लिए आप एक से अधिक विधि का उपयोग कर सकते हैं। अर्थात् निरीक्षकों से सूचना एकत्रित कर सकते हैं आप श्रमिकों से बातचीत करने के लिए एक अनुसूची अथवा प्रश्नावली का उपयोग कर सकते हैं। तथा साक्षात्कार विधि अपना सकते हैं। संगठन का इतिहास तथा संगठन के प्रत्येक सदस्य की स्थिति एवं कार्यों को प्रदर्शित करने वाले संगठन ढाँचे के विषय में सूचनाएँ एकत्रित करने के लिए संगठन के उपलब्ध प्रलेखों के परीक्षण द्वारा विषय सूची विश्लेषण का उपयोग कर सकते हैं। यह संगठन के सभी परिदृश्यों पर पूर्ण ध्यान देती है – सिद्धांत बनाना सामान्य से विशिष्ट हो जाता है तथा व्यक्तिगत प्रकरण उनके विशिष्ट प्रसंग में निश्चित कर दिए जाते हैं। प्रकरण अध्ययन अनुप्रस्थीय या अनुलंबीय आँकड़ों का उपयोग कर सकता है।

शोधकर्ता के लिए स्मरणीय है कि एक संगठन से प्राप्त सामान्यीकरण आवश्यक रूप से किसी अन्य पर लागू नहीं होता है। प्रत्येक संगठन एक भिन्न इकाई होती है। प्रकरण अध्ययन विधि का उपयोग करके अध्ययन करने में छह महत्वपूर्ण चरण सम्मिलित होते हैं:

- शोध प्रश्नों को निर्धारित करना एवं परिभाषित करना
- प्रकरणों का चुनाव करना एवं आँकड़ों के एकत्रित करने एवं विश्लेषण करने की तकनीकों को निर्धारित करना
- आँकड़ों को एकत्रित करने की तैयारी करना
- कार्य-क्षेत्र से आँकड़े एकत्रित करना
- आँकड़ों का मूल्यांकन एवं विश्लेषण करना
- रिपोर्ट तैयार करना

18.8 वृत्तांत विधि

मानवशास्त्र, समाजशास्त्र, राजनीति विज्ञान, इतिहास एवं अर्थशास्त्र में सामाजिक विज्ञान शोध, शोध की सकारात्मकवादी स्थिति से कथन (Narrative approach) के तरीके की ओर जा रही है। लोकप्रिय रूप वैज्ञानिक तरीके के नाम से जाने वाली सकारात्मकवादी स्थिति वह परंपरा थी जिसमें 1950 से लेकर 1980 के दशक तक शोधकर्ताओं को प्रशिक्षित किया गया था। सर्वेक्षण शोध, प्रश्नावली अथवा प्रश्नों के प्रमापित समूह से साक्षात्कार के भी प्रमापित यंत्रों से आशा की जाती थी कि यदि समान नही तो मिलते-जुलते उत्तर सृजन करें। कथन शोध ने इस बात पर जोर दिया कि यह सत्य नहीं होता है। विभिन्न उत्तरदाता प्रत्येक पूछे गए प्रश्न का निर्वचन उन्हीं शब्दों में भिन्न प्रकार से कर सकते हैं। व्यवस्थित साक्षात्कारों में प्रत्युत्तरों का अर्थ एवं अनेक दोनों समाप्त हो जाती हैं। कथन विधि का उपयोग करने वाला शोधकर्ता समझता है कि 'प्रमापित प्रश्न' हो सकते हैं किंतु 'प्रमापित उत्तर' नहीं होते हैं।

18.9 केंद्रित समूह विचार-विमर्श

गुणात्मक शोध की विधियों में से एक जिसे अर्थशास्त्रियों की सहर्ष स्वीकृति प्राप्त हुई वह केंद्रित समूह है। यह बाजार सर्वेक्षणों, किसी आर्थिक कार्यक्रम के प्रत्युत्तर के शीघ्र मूल्यांकन, अध्ययनों के मूल्यांकन एवं मीडिया एवं स्वास्थ्य शोध इत्यादि में प्रायः उपयोग किया जाता है। किसी केंद्रित समूह शोध में छह से आठ लक्ष्य श्रोता (बाजार शोधकर्ता प्रत्येक समूह में 10-12 भागीदारों के समूह को वरीयता देते हैं) किसी सुविधाजनक स्थान पर एकत्रित किए जाते हैं। उन्हें प्रकरण पर निःसंकोच विचार-विमर्श के लिए प्रोत्साहित किया जाता है तथा समूह के बाहर बैठा हुआ प्रलेखक विचार-विमर्श को रिकार्ड करेगा। शोधकर्ता जाँच के विषय से संबंधित प्रश्न करते हुए प्रेरक के रूप में कार्य करता है। क्रूजर (1988 : 18) ने केंद्रित समूह को ''किसी रुचि के परिभाषित क्षेत्र से संबंधित विचार अनुमति प्रज्ञप्त एवं गैर-धमकीपूर्ण वातावरण में प्राप्त करने के लिए सावधानीपूर्वक नियोजित विचार-विमर्श के रूप में परिभाषित किया।

ब्लूर सावधान करते हैं कि केंद्रित समूह चुनाव की विधि तभी होती है जबकि शोध का उद्देश्य ''समूह के मानदंड, समूह के अर्थ एवं समूह की प्रक्रियाओं का अध्ययन'' करना होता है। (Cf. Barbour 2008 : 133)

केंद्रित समूह की कार्यवाही

- केंद्रित समूह का प्रकरण समूह के सभी भागीदारों की सामान्य रुचि का होना चाहिए।
- शोध की आवश्यकताओं की निर्भरता के अनुसार भागीदारों की संख्या भिन्न हो सकती है। न्यादर्श आँकड़ों के सृजन के लिए सबसे महत्वपूर्ण होते हैं।
- विचार-विमर्श प्रारंभ करने के लिए 'प्रोत्साहन सामग्री' संक्षिप्त एवं स्वतंत्र वार्तालाप को प्रोत्साहित करने वाली होनी चाहिए। दृश्य क्लिप, पर्चे, कार्टून घटना के संक्षिप्त स्मरण या विचार स्थगत प्रकरण का उपयोग होना चाहिए।
- परिष्कारक द्वारा विचार-विमर्श का इस प्रकार प्रबंध करना चाहिए कि अनुचित हस्तक्षेप का आभास दिए बिना लंबी विस्तृत बातचीत से बचा जा सके।
- बार्बर का सुझाव है कि सतर्क परिकषर करने के माध्यम से विश्लेषण का पूर्वानुमान करे।
- प्रत्युत्तरों के बार-बार ढाँचा बनाने के रूप में दृश्य विषय-वस्तु को निर्धारित करना।
- कुछ उभरते हुए सिद्धांतों, प्रतिमानों एवं आँकड़ों से प्राप्त प्रवृत्तियों की और अधिक खोज के लिए दूसरे चरण के न्यादर्श पर विचार किया जा सकता है।

ये कुछ ऐसे यंत्र हैं जिनका उपयोग सहभागिता शोधकर्ता प्राथमिक आँकड़े एकत्रित करने के लिए प्रायः करते हैं। इस संक्षिप्त विचार-विमर्श में दो अधिक महत्वपूर्ण कार्यवाही हैं जिन्हें एक सहभागिता शोधकर्ता को अवश्य स्मरण करना चाहिए। प्रथम, स्थापित सिद्धांत (Grounded Theory) तथा दूसरा आँकड़ों के स्रोत एवं न्यादर्श कार्यप्रणाली।

हम इन कार्यवाहियों की अगले भाग में विवेचना करेंगे।

बोध प्रश्न 2

1) केंद्रित साक्षात्कार एवं केंद्रित समूह विचार-विमर्श के बीच अंतर कीजिए?

.....

.....

.....

.....

2) प्रकरण अध्ययन विधि के उपयोगों को बतलाइए।

.....

.....

.....

.....

.....

3) केंद्रित समूह विचार-विमर्श में सम्मिलित कार्यवाहियों की पहचान कीजिए?

.....

.....

.....

.....

18.10 प्रमाणित सिद्धांत (Grounded Theory)

गुणात्मक शोधकर्ता उस शोध डिजाइन को तैयार करने की कार्यप्रणाली से परिचित होते हैं जो परिकल्पना एवं न्यादर्श चुनाव को सम्मिलित करते हुए शोध की विभिन्न कार्यवाहियों की सूची बनाता है। औसत सहभागिता शोधकर्ता सर्वप्रथम क्षेत्र में जाएगा, विभिन्न शोध प्रश्नों की खोज करेगा जो उसके अनुसार समस्या से संबंधित हो सकते हैं तथा क्षेत्र (round) में लोगों से आकस्मिक वार्तालाप करेगा। क्षेत्र की स्थिति की आनुभाविक रूप से खोज करने से पूर्व सामान्यतः शोध डिजाइन तैयार नहीं की जाती है। उसके पश्चात् लोगों एवं शोधकर्ता की प्राथमिकताओं के परिदृश्य का ध्यान रखते हुए शोध समस्या को संगठित किया जाता है।

Glaser and Struss (1967) ने स्थापित सिद्धांत को आगमनात्मक सिद्धांत बनाने की विधि के रूप में प्रस्ताव किया। उनकी राय में सिद्धांतों का परीक्षण नहीं बल्कि शोध के आगे बढ़ने के साथ सृजन होता है। उनका मत था कि 'अच्छा सिद्धांत' सामाजिक शोध के आँकड़ों से व्यवस्थित रूप से खोजा जाता है तथा उसकी सहायता से सत्यापित किया जाता है।'' शोधकर्ताओं ने आगे स्पष्ट किया कि आँकड़ों से सिद्धांत के सृजन का अर्थ यह होता है कि अधिकांश परिकल्पनाएँ एवं अवधारणाएँ आँकड़ों से निकलती ही नहीं बल्कि शोध की अवधि में आँकड़ों के संदर्भ में व्यवस्थित रूप से कार्यान्वित की जाती हैं। इस प्रकार के विश्लेषण में सिद्धांत निर्माण के साथ निरंतर तुलनात्मक विश्लेषण का सृजन होता रहता है। दो प्रकार के सिद्धांतों का सृजन होता है जिनके नाम मौलिक एवं औपचारिक हैं।

मौलिक सिद्धांत किसी विशिष्ट प्रसंग में स्थित होते हैं तथा विशिष्ट प्रक्रिया से संबंधित होते हैं। औपचारिक सिद्धांतों का सृजन सामान्यीकरण से अपेक्षाकृत ऊँचा होता है तथा अनेक मौलिक क्षेत्रों में उनका उपयोग हो सकता है। ब्लैकी (Blaikie) इस बहुत प्रतिभावान तरीके को इस प्रकार संक्षेप में कहते हैं : ''स्थापित सिद्धांत के दृष्टिकोण से की गई शोध परिकल्पनाओं के परीक्षण की पूर्व नियोजित रेखीय प्रक्रिया नहीं बल्कि इसके बजाए एक विकासमान प्रक्रिया होती है जिसमें किसी बिंदु विशेष पर क्या 'खोज की गई है' यही निर्धारित करेगा कि आगे क्या घटित होगा। किसी तथ्य की समझ को उस विकासशील प्रक्रिया के रूप में देखा जाता है जिसमें अनेक विधियों द्वारा अनेक प्रकार के आँकड़ों का एकत्रीकरण सम्मिलित होता है। सरल शब्दों में यह सुझाव देता है कि पूर्व निर्धारित परिकल्पना का परीक्षण करने के उद्देश्य से आपको क्षेत्र में जाना नहीं होता है बल्कि एकत्रित आनुभाविक प्रमाणों से अपने सिद्धांत को विकसित करना होता है।

18.10.1 आँकड़ों के स्रोत एवं न्यादर्श

तीन प्रकार के आँकड़ों के स्रोत मान्य होते हैं :

प्राथमिक आँकड़े : किसी शोधकर्ता या किसी परियोजना पर कार्य करने वाले शोधकर्ताओं द्वारा एकत्रित आँकड़े प्राथमिक होते हैं। ये उन्हें एकत्रित करने/सृजन करने, विश्लेषण एवं रिपोर्ट प्रस्तुत करने के लिए उत्तरदायी होते हैं। अधिकांश भागीदार शोध प्राथमिक आँकड़ों से कार्य करते हैं।

द्वितीयक आँकड़े : ये वे आँकड़े होते हैं जो पहले ही किन्हीं अन्य शोधकर्ताओं/अभिकरणों/व्यक्तियों (मूल आँकड़े) द्वारा एकत्रित किए गए होते हैं तथा सार्वजनिक क्षेत्र अर्थात् जनगणना, राष्ट्रीय न्यादर्श सर्वेक्षण, NCAER आँकड़े, आर्थिक सर्वेक्षण आँकड़े इत्यादि से उपलब्ध होते हैं।

तृतीयक आँकड़े : ये किसी शोधकर्ता या अन्य शोधकर्ताओं, अथवा संस्थानों/एजेंसियों द्वारा विश्लेषण किए गए आँकड़े होते हैं तथा उनके परिणाम तुलना एवं पुनः निर्वचन के लिए उपलब्ध होते हैं। शोध के लिए आँकड़े अनेक स्रोतों (1) व्यक्तियों (2) समग्र से प्राप्त हो सकते हैं।

समग्र से न्यादर्श

एक बार आँकडों के स्रोत की पहचान कर ली जाती है तथा वह समग्र होता है तो यह हमेशा संभव नहीं होता है कि संपूर्ण समग्र को सम्मिलित किया जाय। इन स्थितियों में एक प्रतिनिधि न्यादर्श की पहचान की जाती है। न्यादर्श लेने की कई विधियां होती हैं। साधारण तौर पर प्रायिकता एवं गैर-प्रायिकता न्यादर्श का उपयोग किया जाता है। एक न्यादर्श में अध्ययन किए जाने वाले समग्र के एक या अधिक तत्वों के निहित होने की आशा की जाती है। प्रायिकता न्यादर्श उपयोग करने वाला न्यादर्श या तत्वों का प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करने में सक्षम होता है किंतु गैर-प्रायिकता न्यादर्श में संभव नहीं भी हो सकता है। प्रायिकता न्यादर्शों का चुनाव सरल दैविक एवं क्रमबद्ध दैविक न्यादर्श का उपयोग करके किया जा सकता है। सहभागिता शोधकर्ताओं द्वारा प्रायः उपयोग की जाने वाली गैर-प्राथमिकता न्यादर्श विधियाँ निम्न हैं :

- **आकस्मिक या सुविधाजनक न्यादर्श :** शोध समग्र का ध्यान दिए बिना किसी व्यक्ति का किसी भी स्थान पर कभी भी साक्षात्कार तभी किया जाए जबकि कोई अन्य विधि संभव न हो। यह प्रायः शीघ्र सूचना प्राप्ति के लिए बाजार शोध या उपभोक्ता सर्वेक्षणों के लिए उपयोग की जाती है।

- **अभ्यंश न्यादर्श :** शोध अध्ययन में खोजे जाने वाले कुछ मापदंडों को चुन लेने के पश्चात् यह विधि प्रायः उपयोग की जाती है। समग्र एवं शोध की जा रही समस्या का प्रतिनिधित्व करने के लिए अभ्यंश लिया जाता है। किसी प्रारंभ की जाने वाली वस्तु के मूल्यांकन अध्ययन करने के लिए समग्र को लक्ष्य बनाया जाता है अर्थात् किसी नए वीडियो गेम को प्रारंभ करने के लिए लक्ष्य श्रोता 15-20 वर्ष की आयु समूह में वे युवा हो सकते हैं जो नए वीडियो गेम के विषय पूछताछ करने के लिए वीडियो स्टोर पर आते हैं।

- **निर्णयात्मक या सोद्देश्य :** यह समग्र के पहले से पहचान किए गए उप-समूह के अध्ययन के लिए अन्य लोकप्रिय गैर-प्रायिकता न्यादर्श विधि होती है अर्थात् सफल संगठनात्मक प्रबंधन के लिए मॉडलों का विश्लेषण करने के लिए उन संगठनों से एक न्यादर्श का चुनाव किया जाता है जिन्होंने सफल प्रबंधन पृष्ठभूमि प्रदर्शित की होती है।

- **स्नोबाल विधि** (Snowball Method) : जैसाकि शब्द से ज्ञात होता है, न्यादर्श की यह विधि नेटवर्क, कड़ी संदर्भ, ख्याति न्यादर्श के सिद्धांत पर कार्य करती है। शोधकर्ता एक व्यक्ति या महत्वपूर्ण उत्तरदाता की पहचान करता है तथा वह उसे अन्य पास ले जाता/जाती है जिनकी रुचियाँ शोध का संकेंद्रण समान होता है। इंटरनेट नेटवर्क, मैक-बुक के सदस्य या मर्सीड्स क्लब इत्यादि कुछ स्पष्टीकरण के उदाहरण हैं।

इन न्यादर्श क्रिया-विधियों का उपयोग करने के लिए सहभागिता शोधकर्ताओं की प्रायः यह तर्क देते हुए आलोचना की जाती है कि ये आवश्यक रूप से प्रतिनिधि नहीं होते हैं क्योंकि न्यादर्श वस्तुनिष्ठ रूप में नहीं चुना जाता है। यह स्मरणीय है कि गुणात्मक सहभागिता शोध अभिन्न रूप से संसाधन गहन होता है तथा वृहद् परिमाणात्मक सर्वेक्षणों की तुलना में छोटे न्यादर्शों की आवश्यकता होती है।

18.10.2 व्यक्तिनिष्ठता

गुणात्मक शोधकर्ताओं को यह स्वीकार करने में कोई संकोच नहीं होता है कि शोध में सदैव व्यक्तिनिष्ठता का तत्व होता है। Hallway and Tefferson (2000 : 3) शोध के इस महत्वपूर्ण तत्व पर ध्यान आकर्षित करते हैं। ''शोधकर्ता के रूप में ..... हम अलग नहीं हो सकते हैं बल्कि हमें अपने व्यक्तिनिष्ठ संबद्धता का परीक्षण आवश्यक करना चाहिए क्योंकि इससे हमें वे तरीके बनाने में सहायता मिलेगी जिसमें हम साक्षात्कार आँकड़ों का निर्वचन करते हैं।''

18.10.3 प्रतिलेखन

शोध की गुणात्मक विधि या सहभागिता तरीके के महत्वपूर्ण संघटकों में एक क्षेत्र से प्राप्त आँकड़ों का पुनर्लेखन होता है। आँकड़ों को सामान्यतः स्मृति या कभी-कभी कागज पर अंकित कर लिया जाता है और यदि परिस्थितियाँ अनुकूल हैं तो यह श्रव्य (audio) या कभी-कभी संभव हुआ तो दृश्य (video) रूप में अंकित कर लिया जाता है। विश्लेषण के उद्देश्य से आँकड़ों का प्रतिलेखन करना होता है। यह सबसे कठिन कार्यों में से एक होता है जिसे कई गुणात्मक शोधकर्ताओं को उत्तरदाताओं से व्यवहार करने के लिए सीखना होता है।

18.11 गुणात्मक आँकड़ों का विश्लेषण

गुणात्मक यंत्रों की सहायता से एकत्रित निष्कर्षों के अंतर्गत आँकड़ों के सृजन एवं विश्लेषण की निरंतर प्रक्रिया सम्मिलित होती है। ''यह रेखीय होने के बजाय पुनरावृत्तीय होती है'' (Barbour – 2008 : 189)। परिमाणात्मक विधियाँ, जिनमें सर्वप्रथम आँकड़ों को एकत्रित किया जाता है तथा परिणाम प्राप्त करने के लिए सांख्यिकीय यंत्रों का उपयोग किया जाता है तथा परिणामों के बाद विश्लेषण किया जाता है, यह विधि उनसे भिन्न होती है। गुणात्मक आँकड़ों में हम परिणामों का सृजन नहीं करते बल्कि विस्तृत निष्कर्ष प्राप्त करते हैं। केंद्रित या गहन साक्षात्कारों या केंद्रित समूह विचार-विमर्श एवं प्रकरण अध्ययनों में लोगों से बातचीत करते समय लोग इन कथनों के पुनर्निर्माण की प्रक्रिया के माध्यम से उत्तर प्रदान करते हैं। गुणात्मक आँकड़ों के विश्लेषण में 'स्थिर तुलनात्मक विधि' (Constant Comparative Method) का उपयोग किया जाता है। इसके अंतर्गत लिखित सामग्री की निरंतर तुलना सम्मिलित होती है जिसका अर्थ यह है कि शोधकर्ता को इस बात का अवश्य ध्यान केंद्रित करना चाहिए कि 'कौन क्या तथा किस प्रसंग में कह रहा है।'

गुणात्मक आँकड़ों का विश्लेषण करने की कार्यवाही

- क्षेत्र की डायरी में अंकित क्षेत्र-नोट एवं अवलोकनों का संकलन।
- कुछ विद्वान प्रतिलेखित आँकड़ों के पूर्ण शाब्दिक विवरण प्राप्त करने को वरीयता प्रदान करते हैं। किंतु अन्य व्यक्ति 'सूचकांकित अंकन एवं नोट का उपयोग करने का विकल्प चुनते हैं'।
- शोधकर्ता द्वारा प्रदर्शित परिश्रम एवं आँकड़ों पर आधारित पूछताछ एक अच्छा प्रतिलेखन सृजन करने एवं विश्वसनीय सामान्यीकरण करने में अत्यधिक महत्वपूर्ण होता है।
- अर्थ निकालने के लिए कोड एवं विषय-वस्तु को विकसित करना होता है।
- उत्तरदाता द्वारा क्षेत्र में विकसित अवधारणाओं का उपयोग करने वाला स्थापित सिद्धांत (Grounded Theory) गुणात्मक शोध में सिद्धांत बनाने एवं विश्लेषण करने में एक महत्वपूर्ण तरीका होता है।
- कम्प्यूटर एवं मानवीय विश्लेषण दोनों किए जा सकते हैं।
- NUD*IST, ATLAS/TI कुछ कम्पयूटर साफ्टवेयर हैं जो गुणात्मक विश्लेषण के लिए उपयोग किए जाते हैं।

18.12 रिपोर्ट लेखन

रिचर्डसन (2000 : 923) लेखन को जाँच की एक विधि, स्वयं एवं अपने प्रकरण के विषय में पता लगाने के रूप में स्वीकार करते हैं। यह शोध करने की पृष्ठभूमि होने की व्यक्तिगत कहानी (Ellis & Bochner 2000 : 741) होती है। शोध लेखन का तरीका भिन्न-भिन्न होता है जो इस बात पर निर्भर करता है कि कोई किसी परियोजना एजेंसी, जर्नल, शोध प्रबंध लिख रहा है। प्रमापित प्रारूप में प्रस्तावना/पृष्ठभूमि, विधियाँ, न्यादर्श, परिणाम, विचार-विमर्श तथा निष्कर्ष/संस्तुतियाँ सम्मिलित होती हैं। गुणात्मक शोध विचार-विमर्श का लेखन चुनौतीपूर्ण होता है क्योंकि एकत्रित आँकड़े पुनरावृत्तीय होते हैं। अनेक गुणात्मक शोधकर्ता विचार-विमर्श एवं निष्कर्षों को जोड़ने के लिए उप-शीर्षक 'निष्कर्ष' का उपयोग करने को वरीयता प्रदान करते हैं। एक युवा शोधकर्ता के रूप में आप सदैव अपना लेखन का तरीका विकसित कर सकते हैं किंतु स्मरण रहे कि यदि आप किसी सूचीबद्ध पत्रिका/जर्नल के लिए लिख रहे हैं तो आपसे आशा की जाती है कि उस विशिष्ट जर्नल के लेखन एवं संदर्भ के तरीके का पालन करें जो लेखकों के लिए सदैव जर्नल के पीछे निर्देश के रूप में दिया होता है।

18.13 सहभागिता विधियों की आलोचना

सहभागिता विधियों की प्रभावोत्पादकता से संबंधित मतों में बहुत अंतर पाए जाते हैं। अर्थशास्त्र, राजनीति विज्ञान, प्रबंध अध्ययन एवं विधि शाखा जैसे विषयों में शोध की सहभागिता विधियाँ प्रारंभ करने की माँग में निरंतर वृद्धि हो रही है। क्योंकि परिमाणात्मक शोध की प्रमापित विधियों से वांछित परिणाम प्राप्त नहीं हुए हैं। कुछ अन्य लोग भी हैं जो इस तर्क के आधार पर सहभागिता शोध पर विश्वास का विरोध करते हैं कि इसके अंतर्गत शोध की वस्तुनिष्ठता को प्रभावित करने में व्यक्तिगत पक्षपात की संभावना निश्चित रूप से बनी रहती है। यह सब बहुत छोटे क्षेत्र तक सीमित होता है तथा इसके द्वारा सृजित आँकड़ों के आधार पर प्राप्त सामान्यीकरण अन्य क्षेत्रों में संभव है कि उपयोज्य न हो। सहभागिता शोध की विधियाँ धीमी होती हैं। अन्य अनेक इन अध्ययनों को प्रभाववादी एवं अविश्वसनीय कहते हैं तथा इसे शोध करने का 'कोमल' (Soft) तरीका कहते हैं।

सहभागिता शोध की उपरोक्त कुछ सीमाओं का समाधान करने के लिए कई – शोधकर्ता मिश्रित विधियों के तरीके को वरीयता प्रदान करते हैं। स्मरणीय है कि शोध की मिश्रित विधियों का विस्तृत विवरण पहले ही इकाई 6 में सम्मिलित किया जा चुका है।

18.14 सहभागिता शोध के लाभ

''शोध की गुणात्मक विधि के महत्वपूर्ण लाभों में से एक यह है कि यह प्रतिबिंबात्मक, लोचपूर्ण एवं पुनरावृत्तीय होती है'' (Cornwell & Jewkes 1668 Chambers 1992) Diane Watt (2007 : 82) ठीक ही उल्लेख करते हैं कि चूँकि शोधकर्ता आँकड़ों के एकत्रीकरण एवं विश्लेषण का प्राथमिक यंत्र होता है अतः प्रतिबिंबात्मकता को नितांत आवश्यक माना जाता है''– इस स्थिति को सहभागिता विधियों का उपयोग करने वाले लगभग सभी शोधकर्ताओं का समर्थन प्राप्त है। प्रतिबिंबात्मकता का अर्थ यह होता है कि शोधकर्ता अपने प्रतिबंधों, पूर्वाग्रहों का अवलोकन कर सकता है तथा क्षेत्र से प्राप्त उत्तरों को अंकित करने से पूर्व उनका समाधान कर सकता है। अधिक सरल शब्दों में इसका अभिप्राय यह होता है कि भागीदार शोध में हम उन अन्य व्यक्तियों के साथ व्यवहार करते हैं जो देखने में हमारे जैसे लगते हैं किंतु उनके प्राप्त सामाजिक मूल्य भिन्न-भिन्न हो सकते हैं। हम लोगों द्वारा की गई जाँच के उत्तर जो वे दे सकते हैं, वे उस उत्तर से बहुत भिन्न हो सकता है जो हम आशा

या विश्वास करते हैं कि ठीक उत्तर हैं। सहभागिता शोध विधियों में प्रतिबिंबात्मकता शोध की गुणात्मक एवं परिमाणात्मक विधियों में अंतर करने में सहायता करती है। यह हमें वस्तुनिष्ठता से व्यक्तिनिष्ठता को चित्रित करना सिखाती है। परिमाणात्मक शोधकर्ताओं एवं शोध के वैज्ञानिक (सकारात्मकवादी) विधियों के सबसे मजबूत घोषणा-पत्रों में से एक उनका यह दावा था कि इन विधियों द्वारा व्युत्पन्न परिणाम वस्तुनिष्ठ होते हैं। गुणात्मक शोधकर्ताओं ने 'व्यक्तिनिष्ठ रूप से वस्तुनिष्ठ' होने का आरोप यह तर्क देते हुए स्वीकार किया कि जब एक शोधकर्ता क्षेत्र में अपने उत्तरदाताओं से बातचीत करता है तो उसमें सदैव व्यक्तिनिष्ठता का मनोभाव होता है किंतु परिमाणात्मक शोधों में इसे स्वीकार नहीं किया जाता है तथा न्यादर्श विभ्रम गणना के अंतर्गत समाप्त कर दिया जाता है। इस प्रकार यह गुणात्मक शोधकर्ताओं द्वारा उस पक्षपात को स्वीकार करना अत्यावश्यक मान गया। उन्होंने स्वीकार किया कि व्यक्ति विशेष की प्रतिबिंबात्मकता के रूप में उन्हें अवश्य मान लेना चाहिए। गुणात्मक/सहभागिता शोधकर्ताओं ने उन सीमाओं एवं दृढ़ व्यवहार की पहचान कर ली है जो विशेष रूप से शोध रिपोर्ट लिखते समय पहचान करने, स्वीकार करने एवं इस पक्षपात से जागरूक होने के लिए आवश्यक होती है। (Borochowitz 2005; Denzin & Lincoln 2005 Harding 1991)

हमने Cornwell एवं Jweker कथन में दी हुई 'प्रतिबिंबात्मकता एवं लोच' जो सहभागिता शोध के लाभों का वर्णन करती है की विवेचना की। अब हम सहभागिता शोध के तीसरे गुण 'पुनरावृत्ति' का परीक्षण करते हैं जिसका अर्थ 'दोहराने की योग्यता' से होता है। इसका निष्कर्ष अनेक तरीकों से निकाला जा सकता है। कोई व्यक्ति उत्तर की वैधता को सुनिश्चित करने के लिए एक ही प्रश्न के विषय में अनेक तरीकों से पूछताछ करके बार-बार उत्तर प्राप्त कर सकता है। उत्तरदाताओं से सृजित विस्तृत कथनों में ऐसे उत्तर हो सकते हैं जो अन्य उत्तरदाताओं द्वारा दिए गए कथनों की पुनरावृत्ति होते हैं। इन वार्तालापों के माध्यम से प्राप्त सामान्य स्वीकृत बात हमें जनमत सुनिश्चित करने में सहायता करती है। यह स्थानीय रूप से परिभाषित प्राथमिकताओं एवं स्थानीय प्राथमिकताओं पर ध्यान केंद्रित करके 'निम्न-से-ऊपर' के तरीके को (bottomup approach) सुविधाजनक बनाती है।

सहभागिता तरीकों की लोकप्रियता एवं स्वीकृति से पूर्व अधिकांश नियोजन 'नीचे की ओर टपकन प्रभाव' (Trickle down effect) के दर्शन पर आधारित था। जिसका अभिप्राय यह होता है कि विशेषज्ञ ऊपरी पर्त की योजना बनाते हैं, उसे पुष्ट करते हैं तथा उसका प्रभाव स्वतः समाज के निचले स्तर तक हस्तांतरित हो जाएगा। लोगों की अनुभव की गई आवश्यकताओं का ध्यान नहीं रखा जाता था तथा नियोजन सर्वोच्च स्तर पर भारी होता था। विशाल निधि वाली अनेक मध्यस्थता परियोजनाएँ असफल हो गईं क्योंकि वे स्थानीय लोगों की तुरंत की आवश्यकताओं को पूरा करने में असफल रहीं। उदाहरण के लिए, जनजातीय क्षेत्रों के सुदूर भागों में आदिवासियों के लिए अनेक आवास परियोजनाएँ अप्रयुक्त या अल्पप्रयुक्त बनी रहीं क्योंकि भवन जनजातीय आचार-विचार एवं परंपरागत, जीवन शैली के अनुसार निर्मित नहीं थे। सहभागिता विधि का सर्वप्रथम 'स्थानीय लोगों' द्वारा अनुभव की गई लोगों की तुरंत की आवश्यकताओं की खोज करती है तथा उसके पश्चात् उन आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए नीतियों का सुझाव देती है।

भागीदार शोधकर्ताओं का तर्क है कि ''सहभागिता शोध का अत्यधिक महत्वपूर्ण तत्व विधियों में नहीं बल्कि शोधकर्ताओं की मनोवृत्तियों में जो क्रमशः यह निर्धारित करती है कि किस प्रकार एवं किसके लिए शोध की अवधारणा बनाई जा रही है तथा शोध की जा रही है'' (ibid)। यदि शोधकर्ता उत्तरदाता से घनिष्ठता स्थापित करने में सक्षम नहीं है तो वह अच्छे आँकड़ों का सृजन करने में सक्षम नहीं होगा। सहभागिता शोध में यह भी महत्वपूर्ण होता है कि एक शोधकर्ता उन समस्याओं में तीव्र रुचि ले जिन्हें उसके शोध प्रश्न में विचार किया

गया है। यह स्मरण करना महत्वपूर्ण है कि आप कक्षा में औपचारिक पाठ के माध्यम से ही इन विधियों को सीखकर एक अच्छे सहभागिता शोध की कला में निपुणता प्राप्त नहीं कर सकते। पूर्ण ज्ञान प्राप्त करने के लिए बड़ी संख्या में व्यक्तियों से बार-बार बातचीत करने की आवश्यकता होती है। सहभागिता शोध आपको अनेक यंत्रों के माध्यम से शक्ति प्रदान करता है जैसे – अपने उत्तरदाताओं की गोपनीयता का सम्मान करने की आवश्यकता, उनके निजी जीवन में हस्तक्षेप करने से बचना, उनकी विशिष्ट परंपराओं एवं मूल्यों का सम्मान करना, बिना ठेस पहुँचाए अथवा उनके साथ कोई वाद-विवाद किए बिना अपने साक्षात्कार करना, उनकी राय का सम्मान करना तथा उसे वस्तुनिष्ठ रूप में अंकित करना तथा सभी समय नैतिक बने रहना इत्यादि। आँकड़ों के सृजन एवं विश्लेषण में आपकी सत्यता शोध को आवश्यक गुणात्मक भार प्रदान करेगी। इस संदर्भ में यह स्मरणीय है कि किसी को उत्तरदाता के समय एवं निजी जीवन में कभी भी हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए। अपनी शोध प्रबंध को लिखते समय कभी भी अपने उत्तरदाताओं के नाम एवं स्थान को प्रकट न करें। साक्षात्कार करने एवं उनके विषय में लिखने के लिए उनकी सहमति समान रूप से महत्वपूर्ण होती है।

सहभागिता शोध : एक स्पष्टीकरण

किसी व्यक्ति से आप जुलाई 2014 माह में प्याज की कीमतों के विषय में बाजार में पूछते हैं जबकि बाजार भावना से ज्ञात होता है कि प्याज की कीमतें बहुत अधिक हैं। कल्पित उत्तर के विपरीत उत्तरदाता बताता है कि ''नहीं, यह गत वर्ष जितना अधिक नहीं है क्योंकि गत वर्ष मैंने इसी माह में प्याज 90 रुपए प्रति किलाग्राम खरीदा था। इस वर्ष यह अपेक्षाकृत बहुत सस्ता है। क्योंकि मैंने केवल 40 रुपए प्रति किलोग्राम खरीदा है। उसका उत्तर पिछले समय में उसके अनुभव के सापेक्ष है तथा इसी प्रकार विभिन्न व्यक्तियों के अनुभवों पर निर्भर अन्य उत्तरों में अंतर हो सकता है। किंतु यदि आप 'हाँ' या 'नहीं' के प्रारूप में प्रमापित प्रश्न पूछते हैं तो आपके परिणाम बाजार में 'वास्तविक भावनाओं को प्रतिबिंबित नहीं करेंगे। सहभागिता तरीके के अंतर्गत आपको प्रश्न करने एवं उत्तर में भी लोच होती है। किंतु गैर-सहभागिता तरीके के अंतर्गत आपको केवल दो प्रकार के उत्तर मिलेंगे अर्थात् प्याज की कीमतें बहुत अधिक हैं' अथवा 'नहीं, यह अधिक नहीं हैं।' इस प्रकार सहभागिता तरीकों में अंतनिर्मित लोच होती है। वे वास्तविक बाजार स्थिति की बेहतर समझ प्रदान करते हैं जो नियोजन एवं हस्तक्षेप के लिए अधिक विकल्प प्रदान करते हैं।

बोध प्रश्न 3

1) सहभागिता शोध में उपयोग की जाने वाली न्यादर्श की विभिन्न विधियों की सूची बनाइए?

.....

.....

.....

2) आगमनात्मक सिद्धांत बनाना क्या होता है?

.....

.....

.....

.....

3) गुणात्मक आँकड़ों के विश्लेषण में सम्मिलित विभिन्न चरणों को बताइए?

.....

.....

.....

.....

.....

18.15 सारांश

सहभागिता शोध में आँकड़ों का सृजन अंतरंग के परिदृश्य से किया जाता है जिसे EMIC विचार कहा जाता है। परिमाणात्मक शोध से भिन्न इस तरीके में लोग कथनों के पुनर्निर्माण की प्रक्रिया के माध्यम से उत्तर देते हैं। आँकड़ों के एकत्रीकरण में उपयोग किए जाने वाले यंत्र भागीदार अवलोकन, गैर भागीदार अवलोकन, उपभागीदार अवलोकन, प्रक्रिया युक्त साक्षात्कार, मौखिक एवं जीवन इतिहास कथन, केंद्रीकृत समूह विचार-विमर्श इत्यादि होते हैं। शोधकर्ताओं द्वारा विभिन्न गैर-न्यादर्श तकनीकें उपयोग की जाती हैं। इनके अंतर्गत सुविधाजनक न्यादर्श अभ्यंश न्यादर्श, सोद्देश्य न्यादर्श एवं स्नोबाल न्यादर्श सम्मिलित होते हैं। गुणात्मक आँकड़ों का विश्लेषण 'स्थिर तुलनात्मक विधि' द्वारा किया जाता है। व्यक्तिगत पक्षपात इस विधि के विरुद्ध की जाने वाली महत्वपूर्ण आलोचना है। प्रतिबिंबात्मकता, लोच एवं पुनरावृत्ति इस विधि के अत्यधिक महत्वपूर्ण लाभ हैं। अतः सामाजिक विज्ञान शोध की जटिल समस्याओं का समाधान करने के लिए मिश्रित विधियों के तरीकों के उपयोग द्वारा सहभागिता शोध का अधिकाधिक उपयोग किया जा रहा है।

18.16 शब्दावली

केंद्रीकृत समूह विचार-विमर्श : यह किसी विशिष्ट समग्र उपसमूह (8 से 12 व्यक्तियों का समूह) से वर्णनात्मक सूचना/आँकड़े निकालने की एक तकनीक होती है।

प्रतिबिंबात्मकता : प्रतिबिंबात्मकता का संदर्भ उस स्थिति से होता है जिसमें एक व्यक्ति दूसरों की मनोवृत्ति लेने में समर्थ होने के द्वारा स्वयं हो जाता है तथा उसके द्वारा अपने निजी व्यवहार को प्रतिबिंबित करता है।

स्नोबाल न्यादर्श : यह एक प्रारंभिक विषय के पहचान के माध्यम से विषय एकत्रित करने की वह तकनीक है जो अन्य सक्रिय व्यक्तियों के नाम प्रदान करने में उपयोग किया जाता है।

अभ्यंश न्यादर्श : यह साक्षात्कार करने वाले को अभ्यंश निर्धारित करके सेवा के लिए उत्तरदाताओं का चुनाव करने की वह विधि है जो कुछ महत्वपूर्ण जनांकिकीय लक्षणों का उपयोग करके उत्तरदाताओं के समूह को परिभाषित करते हैं।

पुनरावृत्ति : यह वांछित लक्ष्य या परिणाम प्राप्त करने के उद्देष्य से किसी एक प्रक्रिया को बार-बार करने का कार्य है।

18.17 कुछ उपयोगी पुस्तकें

Borochowitz, Dalit Yassour. (2005). "Teaching a Qualitative Research Seminar on Sensitive Issues". Qualitative Social Work 4:347-62.

Bogdan, R.C. and Taylor, S.J. (1975). Introduction to Qualitative Research Methods: A Phenomenological Approach to the Social Sciences. New York: John Wiley.

Barbour, Rosaline. (2008). Introducing Qualitative Research: A Student Guide to the Craft of Doing Qualitative Research. London: Sage Publications.

Denzin, Norman. K & Lincon, Yvonna. S. (eds) (2000). Handbook of Qualitative Research (2nd ed.). Thousand Oaks, CA: Sage Publications.

Denzin, Norman K. And Yvonna S. Lincoln (2005). "Introduction: The Discipline and Practice of Qualitative Research." pp. 1-33 inThe SAGE Handbook of Qualitative Research edited by Norman K. Denzin, and Yvonna S. Lincoln, California: Sage Publications.

Harding, Sandra. (1991). Whose Science/ Whose knowledge\: Thinking from Women's Lives. Ithaca, New York: Corneel University Press.

Watt, Daine. (2007). On Becoming a Qualitative researcher: The value of reflexivity. The Qualitative Report. Volume 12 Number 1 March 2007. Pp 82-101

Yin, R.K. (1984) Case study research: Design and method. Newbury Park, CA: Sage

Websites: http://www.nova.edu/ssss/QR

18.18 बोध प्रश्नों के उत्तर या संकेत

बोध प्रश्न 1

1) भाग 18.2 देखें।
2) भाग 18.2 देखें।
3) भाग 18.3 देखें।

बोध प्रश्न 2

1) भाग 18.4 एवं 18.9 देखें।
2) भाग 18.7 देखें।
3) भाग 18.9 देखें।

बोध प्रश्न 3

1) उपभाग 18.11.1 देखें।
2) भाग 18.10 देखें।
3) भाग 18.12 देखें।